Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 39

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 दिसम्बर 2016 ई

30 सफर 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

आसमान के नीचे यह बड़ा ज़ुल्म हुआ कि ख़ुदा के नियुक्त किए हुए से जो चाहा उन लोगों ने किया और जो चाहा लिखा. हज़रत यूसुफ के समय फिरऔन को भी सच्चा खवाब आ गया था और बड़े बड़े काफिरों को भी कभी कभी सच्ची ख़वाबें आ जाती हैं और ख़ुदा के मक्बूल ज्ञान ग़ैब की बहुतायत और एक विशेष नेअमत से पहचाने जाते हैं न केवल एक दो ख़वाब से।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अफसोस कि ख़ुदा तआला के निशान खुले तौर पर प्रकट हुए उनसे उन्होंने कुछ लाभ नहीं उठाया और जो कुछ निशान समझ में नहीं आए उन्हें आपत्ति का माध्यम बनाया। इसलिए मैं जानता हूँ कि अब इस फैसले में देर नहीं आसमान के नीचे यह बड़ा ज़ुल्म हुआ कि ख़ुदा के नियुक्त किए हुए से जो चाहा उन लोगों ने किया और जो चाहा लिखा और यह अजीब बात है कि अब्दुल हकीम ख़ान अपने रिसाले "ज़िकरुल्हकीम" के 45 पृष्ठ में मेरे बारे में यह लिखता है " मुझे आप से कोई लग़ज़िश नहीं। वही ईमान है कि आप मसीह का प्रतिरूप हैं। मसीह हैं, सब नबियों का प्रतिरूप हैं।" फिर इसी किताब के पृष्ठ 12 में पंक्ति 15 से लेकर पंक्ति 20 तक मेरी सत्यता में उस का लिखा यह है जो मोटे शब्दों लिखी जाती है। "एक मौलवी मुहम्मद हसन बैग मेरे मौसेरे भाई थे जो हुज़ूर के सख्त विरोधी थे उनके बारे में ख़वाब में मुझे पता चला कि अगर वह जमाना के मसीह के विरोद्ध में आया विरोधता पर अड़ा रहा तो प्लेग से मारा जाएगा। उसका निवास भी शहर से बाहर एक हवादार विशाल मकान में था। यह सपना मैंने उसके सगे भाई और चाचा और अन्य रिश्तेदारों को सुना दी थी। एक साल बाद वह प्लेग से ही मर गया। " (देखें अब्दुल हकीम ख़ान का रिसाला तज़करतुल हकीम पृष्ठ 12) अब देखो कि एक तरफ तो यह व्यक्ति मेरे मसीह मौऊद होने को स्वीकार करता है और न केवल स्वीकार बल्कि मेरी सत्यता के विषय में एक सपना भी प्रस्तुत करता है जो सच्ची निकली।

फिर उसी किताब के अंत में और साथ ही अपने "रिसाला मसीहुद्दज्जाल" में मेरा नाम दज्जाल और शैतान भी रखता है और मुझे ख़यानत करने वाला और हराम खाने वाला और कज़ाब ठहराता है। यह अजीब बात है कि अब्दुल हकीम ख़ान ने अपने इन दोनों विपरीतार्थक बयानों में कुछ दिन का भी अंतर नहीं रखा। एक तरफ तो मुझे मसीह मौऊद कहा और अपने ख़वाबों के साथ मेरी सत्यता की और फिर साथ ही दज्जाल तथा कज़्ज़ाब भी कह दिया। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि ऐसा क्यों किया। लेकिन हर एक को सोचना चाहिए कि उस व्यक्ति की हालत एक होश से वंचित मनुष्य की स्थिति है कि एक खुला खुला विपरीतार्थ अपनी बातों में रखता है। एक तरफ तो मुझे सच्चा मसीहा करार देता है बल्कि मेरी सत्यता में एक सच्चा सपना प्रस्तुत करता है जो पूरा हो गया और दूसरी तरफ मुझे काफिरों से बदतर समझता है क्या इससे बढ़कर कोई और विपरीत अर्थ बात होगी और जिन अवगुणों को वह मेरी ओर संबन्धित करता है उसे ख़ुद सोचना चाहिए था कि जब सपना की दृष्टि से मेरी सच्चाई की यह पुष्टि हो चुकी थी बल्कि मेरी पुष्टि के लिए ख़ुदा ने हसन बैग को प्लेग से हलाक भी कर दिया था।1 तो एक दज्जाल के लिए ख़ुदा ने उस को मारा और ख़ुदा को वे दोष मालूम न था कि बीस साल के बाद मालूम हो गए। 2 और यह बहाना उसका स्वीकार्य नहीं होगा कि मुझे शैतानी ख़वाबें आती होंगी और यह भी एक शैतानी ख़वाब था। क्योंकि यह तो हम स्वीकार कर सकते हैं कि उसे स्वाभाविक समानता के शैतानी ख़वाबें आती होंगी और शैतानी इल्हाम भी होते होंगे। 3 मगर यह हम स्वीकार नहीं कर सकते कि यह शैतानी ख़वाब है क्योंकि शैतान को किसी के मारे जाने के लिए ताकत नहीं दी गई। हां शैतानी ख़वाबें और शैतानी इल्हाम वे हैं जो अब मेरे विरोध की स्थिति में उसे होते हैं क्योंकि उनके साथ कोई नमूना खुदाई ताकत का नहीं अत: उसे कोशिश करनी चाहिए कि शैतान उसके पास से दूर हो जाए।

1.अब अब्दुल हकीम के लिए अनिवार्य है कि मुहम्मद हसन बैग की कब्र पर जाकर रो दे कि हे भाई तू तक़ज़ीब में सच्चा था और मैं झूठा। मेरा गुनाह माफ कर और ख़ुदा से पता करके मुझे बता कि एक कज़्ज़ाब और दज्जाल के लिए क्यों तुझे मार डाला। इसी में से।

2. यह बात भी ग़ौर करने लायक है कि जो व्यक्ति बीस साल तक लेखन और भाषण में मेरा समर्थन करता रहा और विरोधियों के साथ झगड़ता रहा। अब बीस साल के बाद कौन-सी नई बात उसे मालूम हुई जो दोष उसने लिखे हैं वे तो वही हैं जिनका जवाब वे ख़ुद दिया करता था। इसी में से।

3. यह भी अब्दुल हकीम की होश तथा हवास गुम होने की निशानी है कि अपना ख़वाब जिसमें मुहम्मद हसन बैग की मौत बतलाई गई थी और उसके अनुसार हसन बैग मर भी गया था एक शैतानी सपना करार देता है। पता चलता है कि विरोध के जोश ने इस व्यक्ति की बुद्धि मार दी है जिस ख़वाब को घटनाओं ने सच्चा करके दिखला दिया और उसने अल्लाह तआला की तरफ से होने पर मुहर लगा दी वह क्योंकर झूठी हो सकती है। झूठी और स्वाभाविक ख़वाबें तो वे हैं जो अब उसके विरुद्ध आती हैं जिन पर कोई सच्चाई की मुहर नहीं मगर इस सपने में शैतान का एक कण मात्र भी दखल नहीं क्योंकि यह एक भयानक घटना के साथ पूरी हो गई और "मुहयी तथा मुमीत" तो ख़ुदा तआला का नाम है शैतान का नाम नहीं। हां इस सच्चे सपने से मियां अब्दुल हकीम का कोई सम्मान साबित नहीं होता क्योंकि हज़रत यूसुफ के समय फिरऔन को भी सच्चा खवाब आ गया था और बड़े बड़े काफिरों को भी कभी कभी सच्ची ख़ुवाबें आ जाती हैं और ख़ुदा के मक्बूल ज्ञान ग़ैब की बहुतायत और एक विशेष नेअमत से पहचाने जाते हैं न केवल एक दो ख़वाब से। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 190 -192)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा रस्मो-रिवाज और बिदअतों की मनाही (अन्तिम भाग-3)

क़ब्र पर फूल चढ़ाना

कुछ लोग क़ब्रों पर फूल रखते या फूलों की चादर चढ़ाते हैं। इस बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया :-

''इस से मरने वाले की रूह को कोई ख़ुशी नहीं हो सकती और यह नाजाइज़ है। इसका कोई संकेत क़ुर्आन व हदीस से साबित नहीं, इस के बिदअत और व्यर्थ होने में कोई शक नहीं"।

(बदर 12 अगस्त 1909 ई.)

नज़र व नियाज़ के लिये क़ब्रिस्तान जाना और पक्की क़ब्रें बनाना

इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश है :-

''नज़र व नियाज़ के लिये क़ब्रों पर जाना और वहाँ जाकर मन्नतें माँगना सही नहीं है। हाँ वहाँ जाकर इबरत (नसीहत) सीखे और अपनी मौत को याद करे तो जायज़ है। कब्रों को पक्का बनाना मना है। अगर मय्यत को महफ़ूज़ रखने की नीयत से हो तो हर्ज नहीं है, यानी ऐसी जगह जहाँ पानी वग़ैरह आने का अनुमान हो उसमें भी दिखावा जायज़ नहीं है"।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द पाँच, पृ. 433)

क़ब्रों पर चिराग़ जलाना

एक रस्म जहालत की यह भी है कि कुछ लोग बुज़ुर्गों के मज़ारों पर रात को चिराग़ जलाते हैं। यह हिन्दुवाना और मुशरिकाना बिदअत है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से मना फ़रमया है :-

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَعَنَ اللّٰهُ زَائِرَاتِ الْقُبُوْرِ وَالْمُتَّخِذِيْنَ عَلَيْهَا الْمَسَاجِدَ وَالسُّرُجَ (ترمذی)

अर्थात - इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया - अल्लाह तआला ने क़ब्रों की ज़ियारत (दर्शन) करने वाली औरतों पर लानत की और उन पर जो क़ब्रों पर मस्जिदें बनाते और उन पर चिराग़ जलाते हैं।

पहले आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ब्रों की ज़ियारत से मना फ़रमाया था फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वजह से इजाज़त दी कि आदमी मौत को याद करके ख़ुदा और आख़िरत की तरफ़ ध्यान करे। औरतों को इन बातों के बारे में ख़ास परहेज़ करना चाहिए। कभी-कभी वह कम जानकारी की वजह से इन बातों में कोई फ़र्क़ नहीं समझतीं।

जिसके यहाँ मातम (शोक) हो उसके साथ हमदर्दी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सवाल किया गया -

''क्या यह जायज़ है कि जब मृत्यु के कारण किसी भाई के घर में मातम हो जाये तो दूसरे दोस्त अपने घरों में उस का खाना तैयार करें"।

हुज़ूर ने फ़रमाया :-

''यह न सिर्फ़ जायज़ बल्कि भाई भाई की हमदर्दी के लिहाज़ से यह ज़रूरी है कि ऐसा किया जाये"। (मल्फ़ूज़ात, जिल्द नौ, पृ. 304)

आधे शाअबान का हल्वा

एक रस्म यह जारी है कि शअबान के महीना में हलवा बनाते और बाँटते हैं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :-

''यह रस्म हल्वा वग़ैरह सब बिदअतें हैं।" (मल्फ़ूज़ात जिल्द नौ, पृ. 394)

आशूरह मोहर्रम के ताबूत और महफ़िल

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सवाल किया गया कि मोहर्रम पर जो लोग ताबूत बनाते हैं और महफ़िल करते हैं। इसमें शामिल होना कैसा है?

हुज़ूर ने फ़रमाया कि :- ''गुनाह है"। (मल्फ़ूज़ात जिल्द नौ, पृ. 436)

क़ाज़ी मुहम्मद ज़हीरुद्दीन साहब अकमल ने सवाल किया कि मोहर्रम की दसवीं को जो शर्बत और चावल वग़ैरह बाँटते हैं अगर यह लिल्लाह भलाई पहुँचाने की नीयत से हो तो इस के बारे में हुज़ूर का क्या इर्शाद है। फ़रमाया :-

''ऐसे कामों के लिये दिन और वक़्त निर्धारित कर देना एक रस्म और बिदअत है और धीरे-धीरे ऐसी रस्में शिर्क की तरफ़ ले जाती हैं। अत: इन से बचना चाहिए क्योंकि ऐसी रस्मों का परिणाम अच्छा नहीं। शुरु में इसी ख़्याल से हुआ मगर अब तो इसने शिर्क और ग़ैरुल्लाह के नाम का रंग धारण कर लिया है। इसलिये हम इसे नाजायज़ ठहराते हैं। जब तक ऐसे रिवाजों को कुचल न दिया जाये तब तक झूठी आस्थाएँ दूर नहीं होतीं"।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 9, पृ. 214)

तस्बीह का प्रयोग

आम तौर पर देखा जाता है कि कुछ लोग चलते फिरते और मज्लिस में बैठे तस्बीह के दाने गिनते रहते हैं और ये दर्शाते हैं कि जैसे वह हर समय ख़ुदा की याद में व्यस्त हैं। इस बारे में हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया :-

''तस्बीह करने वाले का असल मक़सद गिनती होता है, और वह इस गिनती को पूरा करना चाहता है। अब तुम खुद समझ सकते हो कि या तो वह गिनती पूरी करे और या ध्यान करे और ये साफ़ बात है कि गिनती को पूरा करने की फ़िक्र करने वाला सच्ची तौबा कर ही नहीं सकता है। अम्बिया अलैहिस्सलाम और कामिलीन (महान) लोग जिनको अल्लाह तआला की मोहब्बत का दिल से शौक़ होता है और जो अल्लाह तआला के इश्क़ में फ़ना शुदा (निछावर) होते हैं उन्होंने गिनती नहीं की और न इसकी ज़रूरत समझी"। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 7, पृ.18)

तावीज़ गण्डे

फ़क़ीरों और सूफ़ियों का एक तरीक़ा यह है कि बीमारियों से शिफ़ा याबी, (स्वास्थ्य हासिल करना) संकटों के दूर होने, ख़ुशियाँ प्राप्त करने के लिये और उद्देश्यों में सफ़लता के लिये, अथवा सफ़र (यात्रा) वग़ैरह में सुरक्षित रहने के लिये इमाम ज़ामिन बाँधते हैं या तावीज़ लिख कर देते हैं और कई तरह की क़ुर्बानियाँ करने को कहते हैं और कई प्रकार के अमल बताते हैं जो बहुत ही हास्यास्पद होते हैं। ख़ुद ही कुछ शंका दिलों में पैदा करते हैं और फिर उनका इलाज बताते हैं। अनपढ़ों की तो बात ही क्या अच्छे पढ़े लिखे और समझदार लोग तावीज़ों पर विश्वास रखते और गले में डालते या बाज़ुओं पर बाँधते हैं। इसी रस्म के मुताबिक़ एक दिन रामपुर के एक शख़्स ने कुछ मनोकामनाएँ लिख कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश कीं - हुज़ूर ने फ़रमाया :-

''अच्छा हम दुआ करेंगे।"

वह व्यक्ति हैरान होकर पूछने लगा- आप ने मेरी अर्ज़दाश्त (निवेदन) का जवाब नहीं दिया - हुज़ूर ने फ़रमाया :-

''हमने तो कहा है कि हम दुआ करेंगे"। इस पर वह व्यक्ति कहने लगा, हुज़ूर कोई तावीज़ नहीं किया करते ? हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया :- ''तावीज़ गण्डे करना हमारा काम नहीं। हमारा काम तो सिर्फ़ अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ करना है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 10, पृ. 203)

धूम्रपान

आज कल सिगरेट पीना आम है और फ़ैशन मैं शामिल है। ज़्यादा इस्तेमाल की वजह से इसको ज़रूरी समझ लिया गया है और नुक़सान के पहलू को अक्सर भुला दिया जाता है। इस बारे में हुज़ूर मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शाद निम्नलिखित हैं। हुज़ूर फ़रमाते हैं :-

1. ''इन्सान आदत को छोड़ सकता है बशर्ते कि उसमें ईमान हो और बहुत से ऐसे आदमी दुनिया में मौजूद हैं जो अपनी पुरानी आदत को छोड़ बैठे हैं। देखा गया है कि कुछ लोग जो हमेशा शराब पीते चले आये हैं बुढ़ापे में आकर जबकि आदत को छोड़ना ख़ुद बीमार पड़ना होता है, बिना किसी ख़्याल के छोड़ बैठते हैं और थोड़ी सी बीमारी के बाद अच्छे भी हो जाते हैं। मैं हुक्क़ा को मना करता और नाजायज़ क़रार देता हूँ मगर उन सूरतों में कि इंसान को कोई मजबूरी हो। ये एक व्यर्थ चीज़ है और इससे इंसान को परहेज़ करना चाहिए।" (बदर 28 फ़रवरी 1907 ई.)

2. ''तम्बाकू के बारे में यद्यपि शरीअत ने कुछ नहीं बताया लेकिन हम इसे इसलिये बुरा ख़्याल करते हैं कि अगर पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में होता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसके इस्तैमाल को मना फ़रमाते"।

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

केवल बच्चों को वक्फ करने के लिए प्रस्तुत करने से माता-पिता की ज़िम्मेदारी खत्म नहीं हो जातीं बल्कि पहले से अधिक हो जाता है। यह भी याद रखना चाहिए कि हर विशेष रूप से वक्फ नौ बच्चा उन के पास जमाअत की अमानत है जिस की तरबियत और उसे जमाअत और परिवेश का सबसे अच्छा हिस्सा बनाना माता पिता का फर्ज़ है।

एक वक्फ नौ बच्चे की सोच नहीं होनी चाहिए कि हमें अगर वक्फ किया तो हम सांसारिक रूप में कैसे गुज़ारा करेंगे या यह शंका दिल में पैदा हो जाए कि हम माता पिता की आर्थिक सेवा कैसे करेंगे। जो वाक़फीन नौ लड़के विशेष रूप से अपनी पढ़ाई पूरी कर चुके हैं ख़ुद भी अपनी ज़ाहरी और वित्तीय स्थिति में सुधार के स्थान पर रूहानी हालत में सुधार की कोशिश करें।

वाक़फीन नौ को तो अपने संतोष के मानकों को बहुत बढ़ाना चाहिए अपनी क़ुर्बानी के मानकों को बहुत बढ़ाना चाहिए।

वाक़फीन नौ को जहां कुरबानी की गुणवत्ता बढ़ाना है वहाँ अपनी इबादतों की गुणवत्ता को भी बढ़ाना चाहिए अपनी वफ़ा की गुणवत्ता को भी बढ़ाना चाहिए अपने और अपने माता पिता के वादा को पूरा करने के लिए अपनी सभी शक्तियों और सामर्थयों से काम लेने की कोशिश करनी चाहिए धर्म के लिए काम लेने की कोशिश करनी चाहिए धर्म की पदोन्नति के लिए काम करने की कोशिश करनी चाहिए तब अल्लाह तआला भी प्रदान करता है और किसी को बिना बदला अल्लाह तआला नहीं छोड़ता।

अपनी धार्मिक शिक्षा के दौरान विभिन्न समयों से गुज़रते समय बजाय ख़ुद निर्णय करने के जमाअत से पूछें कि हमें किस लाइन में जाना है। लाइन चुनने के बारे में वाक़फीन नौ लड़के पहले भी कह चुका हूं कि वाक्फीन नौ लड़के जामिया में जाकर मुरब्बी और उपदेशक बनने को पहली प्राथमिकता दें।

हर अहमदी जो चाहता है कि उनकी नस्लें जमाअत के निज़ाम से जुड़ी रहीं उन्हें चाहिए कि अपने घरों को अहमदी घर बनाएं दुनिया वालों के घर न बनाएं अन्यथा अगली नस्लें दुनिया में पड़ कर न केवल अहमदियत से दूर चली जाएंगी बल्कि ख़ुदा तआला से भी दूर हो जाएंगी और अपनी यह दुनिया और परलोक दोनों बर्बाद करेंगी।

सारे अहमदियों विशेष रूप से वक्फ नौ बच्चे और बच्चियों और उन के माता पिता को बहुत महत्तवपूर्ण नसीहतें।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 अक्तूबर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुल सलाम, टोरन्टो, कैनेडा।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत में बच्चों को वक्फ करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। दैनिक मुझे माता पिता के ख़त मिलते हैं। कुछ दिनों में उनकी संख्या बीस पच्चीस हो जाती है जिस में माता-पिता अपने होने वाले बच्चों को वक्फ नौ में शामिल करने का अनुरोध करते हैं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने जब यह तहरीक फरमाई थी, पहले स्थायी नहीं थी फिर आप ने इसे स्थायी कर दिया और जमाअत ने भी विशेष रूप से माताओं ने उस पर हर देश में लब्बैक कहा। आज से बारह तेरह साल पहले जमाअत को जो इस तरफ ध्यान दिलाया था इस कारण से जो संख्या वाक़फीन नौ की 28000 से ऊपर थी अब यह संख्या अल्लाह तआला की कृपा से 61000 के क़रीब पहुंच चुकी है जिसमें से छत्तीस हजार से ऊपर लड़के हैं और बाकी लड़कियां। मानो समय के साथ यह प्रवृत्ति बढ़ रही है कि हम ने अपने बच्चों को जन्म से पहले वक्फ करना है

लेकिन केवल बच्चों को वक्फ करने के लिए प्रस्तुत करने से माता-पिता की ज़िम्मेदारी खत्म नहीं हो जातीं बल्कि पहले से अधिक हो जाती हैं। बेशक एक अहमदी बच्चे की तरबियत माता पिता पर है और माता पिता अपने बच्चे की भलाई ही चाहते हैं। इस की दुनियावी तालीम भी चाहते हैं तरबियत भी चाहते हैं धर्म की तालीम भी चाहते हैं अगर वे धार्मिक प्रवृत्ति रखने वाले माता पिता हैं लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि हर बच्चा विशेष रूप से वक्फ नौ बच्चा उन के पास जमाअत की अमानत है जिस की तरबियत और उसे जमाअत और परिवेश का सबसे अच्छा हिस्सा बनाना माता पिता का फर्ज़ है लेकिन वाक़फीन नौ बच्चों की तरबियत उनकी धार्मिक और सांसारिक शिक्षा पर विशेष ध्यान और उन्हें बेहतर तैयार करके जमाअत को देना इस लिहाज़ से भी ज़िम्मेदारी बन जाती है कि जन्म से पहले माता-पिता यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हम ने जो कुछ भी हमारे यहां पैदा होने वाला है लड़का है या लड़की उसे ख़ुदा के लिए अल्लाह तआला के धर्म के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के मिशन को पूरा होने के लिए जो हिदायत के प्रकाशन की पूर्णता का मिशन है, जो इस्लाम की शिक्षा को दुनिया में फैलाने का मिशन है, जो ख़ुदा तआला का हक़ अदा करके दुनिया को ध्यान दिलाने का मिशन है, जो एक दूसरे का हक़ अदा करने की इस्लामी शिक्षा को दुनिया के हर व्यक्ति तक पहुंचाने का मिशन है, के लिए प्रस्तुत करते हैं।

इसलिए यह कोई मामूली ज़िम्मेदारी नहीं है जो वक्फ नौ बच्चों के माता पिता विशेष रूप से माँ अपने होने वाले बच्चे के जन्म से पहले ख़ुदा तआला के साथ एक अहद करते हुए प्रस्तुत करती है और समय के ख़लीफा को लिखते हैं कि हम हज़रत मरियम की माँ की तरह अल्लाह तआला से यह अहद करते हुए अपने बच्चे को वक्फ नौ तहरीक में प्रस्तुत कर रहे हैं कि رَبِّ اِنِّیْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِیْ بَطْنِیْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّیْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ (आले इम्रान: 36)कि हे मेरे रब्ब! जो कुछ मेरे पेट में है तेरे लिए पेश कर रही हूँ। यह तो मुझे नहीं पता कि क्या है, लड़का है या लड़की लेकिन जो भी है मेरी इच्छा है मेरी दुआ है कि यह धर्म का सेवक बने।" *फतकबल मिन्नी*।" मेरी यह इच्छा और दुआ कबूल फ़रमा और इसे स्वीकार कर ले।اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ। तू बहुत सुनने वाला और जानने वाला है। इसलिए मेरी विनम्र दुआ सुन ले तुझे पता है कि यह दुआ मेरे दिल की आवाज़ है। यह बच्चे के माताओं की

इच्छा होती है वक्फ से पहले और होनी चाहिए एक अहमदी माँ जब वह अपने बच्चे को वक्फ नौ के लिए प्रस्तुत करती है और इस में पिता भी शामिल है।

इसलिए जब यह दुआ वक्फ नौ में शामिल करने वाले बच्चे की माँ करती है तो इन दायित्वों का भी एहसास रहना चाहिए जो इस वादा के निभाने और दुआ स्वीकार होने के लिए माताओं पर भी और बापों पर भी लागू होती हैं। वक्फ नौ में बच्चा माँ और पिता दोनों की सहमति से पेश होता है। अल्लाह तआला ने यह दुआ कुरआन में सुरक्षित इसलिए नहीं फरमाई कि एक पुराने ज़माने का किस्सा सुनाना उद्देश्य था, बल्कि अल्लाह तआला को यह दुआ इतनी पसंद आई और यह इसलिए सुरक्षित फरमाई कि भविष्य में आने वाली माताएं भी यह दुआ करके अपने बच्चों को धर्म के लिए असाधारण कुरबानी करने वाला बनाएं। यद्यपि कि हर मोमिन धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने के लिए प्रतिबद्ध है लेकिन वक्फ करने वाले इन मानकों की सीमाओं को छूने वाले होने चाहिए। अत: जब आरम्भ से माताएं और पिता अपने बच्चों के मन में डालेंगे कि तुम वक्फ हो और हम ने तुम्हें विशेष रूप से धर्म की सेवा के लिए वक्फ किया था और यही तुम्हारी ज़िन्दगी का उद्देश्य होना चाहिए और साथ ही दुआएं कर रहे होंगे तो बच्चे इस सोच के साथ परवान चढ़ेंगे कि उन्होंने धर्म की सेवा करनी है इस सोच के साथ परवान नहीं चढ़ेंगे कि हम ने बिज़नेस मैन बनना है, हम ने खिलाड़ी बनना है हम ने अमुक क्षेत्र में जाना है हम ने अमुक क्षेत्र में जाना है बल्कि उनके द्वारा यह सवाल किया जाएगा कि मैं वक्फ नौ हूँ मुझे जमाअत बताए मुझे समय का ख़लीफा बताए कि किस क्षेत्र में जाऊं। मुझे अब दुनिया से कोई उद्देश्य नहीं जो वादा मेरी माँ ने जन्म से पहले किया था और जो दुआएं उसने मेरे जन्म से पहले मांगी थीं और फिर मेरी तरबियत ऐसे रंग में की कि मैं दुनिया की बजाय धर्म को तलाश करूं। मेरा यह सौभाग्य है कि मेरी माँ की दुआओं को अल्लाह तआला ने सुना और मेरी माँ की कोशिशों को जो उसने मेरी तरबियत के लिए कीं अल्लाह तआला ने फल लगाया अब मैं बिना किसी सांसारिक लालच और इच्छा के केवल धर्म के लिए अपने आप को वक्फ करता हूँ।

इस सोच की अभिव्यक्ति पहले तो वाक़फीन नौ को अपने वक्फ का नवीकरण करते हुए पंद्रह साल की उम्र में करनी चाहिए। इसके लिए मैंने प्रशासन जो है इन को संबंधित हिदायत भी की हुई है कि पंद्रह साल की उम्र में नियमित लिखित रूप से भी उन से लें कि वे वक्फ जारी रखेंगे या जारी रखना चाहते हैं। फिर बीस इक्कीस साल की उम्र में जब पढ़ाई खत्म हो जाती है उन सभी के लिए आवश्यक है कि जामिया में प्रवेश नहीं हुए कि वह इस बांड को दोबारा लिखें तो अगर किसी को यह कहा जाए कि किसी विभाग में कुछ तरबियत ले लो तो पुन: लिखें। मानों कि हर स्तर पर वक्फ नौ को स्वयं हार्दिक इच्छा के अनुसार अपने वक्फ को कायम रखना व्यक्त करना चाहिए।

इस बारे में जैसा कि मैंने कहा, मैं पहले विस्तृत कई बार वर्णन कर चुका हूँ। एक वक्फ नौ बच्चे की सोच नहीं होनी चाहिए कि हम ने अगर वक्फ किया तो हम सांसारिक रूप में कैसे गुज़ारा करेंगे या यह शंका दिल में पैदा हो जाए कि हम माता पिता की आर्थिक सेवा कैसे करेंगे या शारीरिक रूप से सेवा कैसे करेंगे। पिछले दिनों मेरी यहाँ वाक़फीन नौ के साथ कक्षा थी तो एक लड़के ने यह सवाल किया कि अगर हम वक्फ करके जमाअत को हर समय अपनी सेवाओं को प्रस्तुत कर दें तो हम अपने माता पिता की वित्तीय या शारीरिक या सामान्य सेवा कैसे कर सकेंगे। यह सवाल पैदा होना इस बात का इज़हार है कि माता-पिता ने बचपन से अपने वाक़फीन नौ बच्चों के दिल में यह बात बिठाई ही नहीं कि तुम्हें हम ने वक्फ कर दिया है और अब तुम केवल जमाअत की अमानत हमारे पास हो। दूसरे बहन भाई हमारी सेवा कर लेंगे। तुम ने केवल अपने आप को समय के ख़लीफा को प्रस्तुत कर देना है और उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलाना है।

हज़रत मरियम की मां की दुआ में जो शब्द "मुहर्रेन" इस्तेमाल हुआ है, उसका यही मतलब है कि मैंने इस बच्चे को सांसारिक दायित्वों से पूरी तरह अलग किया और मेरी दुआ है कि विशेष रूप से धर्म की ज़िम्मेदारी ही इस की प्राथमिकता हो जाए।

अत: उन माताओं और बापों से सबसे पहले तो मैं यह कहना चाहता हूं कि वक्फ नौ का सिर्फ नाम होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि वक्फ तो एक महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। एक वक्फ नौ के जवानी तक पहुंचने तक माता-पिता और उसके बाद ही ख़ुद उस की अपनी ज़िम्मेदारी बन जाती है। कुछ लड़के लड़कियां जिन्होंने सांसारिक शिक्षा प्राप्त की है ज़ाहिरी तौर पर बड़ा जोश दिखाते हैं अपनी सेवाएं प्रदान कर देते हैं लेकिन बाद में ऐसे उदाहरण भी सामने आएं। कि इसलिए छोड़ जाते हैं कि जमाअत जो भत्ता देती है उसमें उनका गुज़ारा नहीं होता। जब एक बड़ा लक्ष्य हासिल करना है तो तंगी और कुरबानी तो करनी पड़ती है। तो अगर बचपन से यह बात वाक़फीन के दिमाग़ों में बिठा दी जाए कि वक्फ ज़िन्दगी से कोई बड़ी बात नहीं है। सांसारिक रूप से दूसरे की तरफ देखने की स्थान पर यह सोचने के स्थान पर कि मेरा अमुक सहपाठी मेरी जितनी शिक्षा प्राप्त कर के लाखों कमा रहा है और मैं एक महीना भी उस की एक दिन के आय के रूप में नहीं कमा रहा, यह सोच होनी चाहिए कि जो स्थान मुझे ख़ुदा तआला ने दिया है वह सांसारिक संपत्ति से बहुत अधिक है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद को सामने रखें कि सांसारिक धन की दृष्टि से अपने से कम को देखो और आध्यात्मिक मामले में अपने से बढ़े हुए को देखो ताकि सांसारिक दौड़ में बढ़ने के स्थान पर रूहानी दौड़ में बढ़ने की कोशिश करो।

(बुख़ारी किताबुर्रिकाक हदीस 6490)

इसलिए जो वाक़फीन नौ लड़के विशेष रूप से अपनी पढ़ाई पूरी कर चुके हैं ख़ुद भी अपनी ज़ाहरी और वित्तीय स्थिति में सुधार के स्थान पर रूहानी हालत में सुधार की कोशिश करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो हर अहमदी से इस बात की आशा रखते हैं कि इसका स्तर अत्यधिक ऊंचा हो तो एक व्यक्ति जिसके माता-पिता ने जन्म से पहले उसे धर्म के लिए वक्फ कर दिया और इसके लिए दुआएं भी की हों उसे कितना इन मानकों को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

"मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ कि अपनी जमाअत को वसीयत करूं और यह बात पहुंचा दूं। भविष्य में प्रत्येक को विकल्प है कि वह उसे सुने या न सुने कि अगर कोई मुक्ति चाहता है और पवित्र ज़िन्दगी और अनन्त ज़िन्दगी का इच्छुक है तो वह अल्लाह तआला के लिए अपनी ज़िन्दगी वक्फ करे और प्रत्येक इस कोशिश और चिंता में लग जाए कि वे इस स्थिति और स्तर को प्राप्त करे कि कह सके कि मेरी ज़िन्दगी, मेरी मौत, मेरी कुरबामियां, मेरी दुआ अल्लाह तआला ही के लिए हैं और हज़रत इब्राहीम की तरह उसकी रूह बोल उठे। قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (अल्बकरह: 132) कि मैं तो अपने रब्ब का आज्ञाकारी बन चुका हूँ। फरमाया "जब तक मनुष्य ख़ुदा में खो नहीं जाता, ख़ुदा का होकर नहीं मरता वह नई ज़िन्दगी नहीं पा सकता। अत: तुम जो मेरे साथ संबंधित हो तुम देखते हो कि ख़ुदा के लिए ज़िन्दगी वक्फ में अपनी ज़िन्दगी का वास्तविक उद्देश्य समझता हूँ।" "यही बुनियाद है और यही उद्देश्य है" फिर तुम अपने अंदर देखो कि तुम में से कितने हैं जो मेरे इस कर्म को अपने लिए पसंद करते और ख़ुदा के लिए ज़िन्दगी वक्फ करने को प्रिय रखते हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 100 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए वाक़फीन नौ को साधारण अहमदी से बढ़ कर यह मुकाम हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। धर्म के लिए दूसरे भी वक्फ करते हैं और प्रत्येक वक्फ कर भी नहीं सकता। यह भी अल्लाह तआला ने फरमाया है कि आप में से एक गिरोह होना चाहिए जो धर्म का ज्ञान प्राप्त करे और फिर जाकर अपने लोगों को बताए। सांसारिक कार्यों में भी उलझे हुए हैं लेकिन हज़रत मसीह मौऊद ने यह भी फरमाया कि सांसारिक काम करते हुए भी ख़ुदा का डर और धर्म को प्राथमिकता देनी चाहिए।

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 2 पृ 19 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

वाक़फीन नौ को तो अपने संतोष के मानकों को बहुत बढ़ाना चाहिए। अपनी क़ुर्बानी के मानकों को बहुत बढ़ाना चाहिए। यह नहीं सोचना चाहिए कि

हम वित्तीय लिहाज़ से कमज़ोर होंगे तो हमें शायद हमारे भाई बहन कम समझें या माता पिता हमें इस तरह ध्यान न दें जिस तरह बाक़ियों को दे रहे हैं। अव्वल तो माता-पिता को ही यह विचार कभी दिल में नहीं लाना चाहिए कि वाक़फीन ज़िन्दगी दूसरों से छोटे हैं। वाक़फीन ज़िन्दगी की गुणवत्ता और स्थान उनकी नज़र में बहुत ऊंचा होना चाहिए लेकिन वाक़फीन ज़िन्दगी को ख़ुद अपने आप को हमेशा दुनिया का सब से विनम्र आदमी समझना चाहिए।

वाक़फीन नौ को जहां कुरबानी की गुणवत्ता बढ़ाना है वहाँ अपनी इबादतों की गुणवत्ता को भी बढ़ाना चाहिए। अपनी वफ़ा की गुणवत्ता को भी बढ़ाना चाहिए। अपने और अपने माता पिता के वादा को पूरा करने के लिए अपनी सभी शक्तियों और सामर्थयों से काम लेने की कोशिश करनी चाहिए। धर्म के लिए काम लेने की कोशिश करनी चाहिए। धर्म की पदोन्नति के लिए काम करने की कोशिश करनी चाहिए तब अल्लाह तआला भी सम्मानित करता है और किसी को बिना बदला अल्लाह तआला नहीं छोड़ता।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर अपने वादों को वफा के साथ पूरा करने के बारे में उपदेश फरमाते हुए फरमाते हैं कि

"ख़ुदा ने कुरआन शरीफ में इसलिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सराहना की है जैसा कि फरमाया है وَ اِبۡرٰهِيۡمَ الَّذِىۡ وَفّٰٓى (अन्नजम 38) कि उसने जो वादा किया उसे पूरा कर दिखाया।

(मल्फूज़ात भाग 6 पृ 234 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए वादों को पूरा करना कोई मामूली बात नहीं है और वह वादा जो वक्फ ज़िन्दगी का वादा है जिसके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दर्द भरे शब्द हम सुन चुके हैं। यह कैसा महान वादा है। अगर हर वक्फ नौ लड़का और लड़की अपने इस वादा को वफा के साथ पूरा करने वाला हो तो हम दुनिया में एक इंकलाब पैदा कर सकते हैं। कुछ युवा जोड़े मेरे पास आते हैं कहते हैं कि मैं भी वक्फ नौ हूँ मेरी पत्नी भी वक्फ नौ है मेरा बच्चा भी वक्फ है। या माँ कहेगी कि मैं वक्फ नौ हूँ पिता कहेगा में वक्फ नौ हूँ और मेरा बच्चा वक्फ नौ है तो यह बड़ी सराहनीय बात है लेकिन इसका वास्तविक लाभ तो जमाअत को तभी होगा जब वफा के साथ अपने वक्फ के वादा को पूरा करेंगे।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में वफा के लेख को एक जगह अधिक विस्तार से वर्णन किया है और इस तरह खोला है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला की नज़दीकी पाने का रास्ता यह है कि इसके लिए ईमानदारी दिखाई जाए।" सत्य पर स्थिर रहो। वफ़ा तुम्हारी सच्ची हो। अल्लाह तआला से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो निकटता प्राप्त की तो उसकी वजह यही थी। इसलिए कहा وَ اِبۡرٰهِيۡمَ الَّذِىۡ وَفّٰٓى (अन्नजम 38) कि इब्राहीम वह इब्राहीम है जिस ने वफादारी दिखाई। ख़ुदा तआला के साथ सच्चाई और ईमानदारी और वफादारी दिखाना एक मौत चाहता है। जब तक मनुष्य दुनिया और उसके सारे आनन्दों और सम्मानों पर पानी फेर देने को तैयार न हो जाए और हर अपमान और कठोरता और तंगी ख़ुदा के लिए बर्दाशत करने को तैयार न हो यह गुण पैदा नहीं हो सकता। मूर्ति पूजा यही नहीं कि इंसान किसी पेड़ या पत्थर की पूजा करे, बल्कि हर एक चीज़ जो अल्लाह तआला की नज़दीकी से रोकती है और उस पर प्राथमिक होती है वह मूर्ति है और इतनी मूर्तियां इंसान अपने अंदर रखता है कि उसे पता नहीं लगता कि मैं मूर्ति पूजा कर रहा हूँ।" कहीं आजकल के ज़माना में ड्रामे मूर्ति बन गए हैं। कहीं इंटरनेट मूर्ति बन गया है। कहीं दुनिया कमाना मूर्ति बन गया है। कहीं और इच्छाएं मूर्ति बन गई हैं। आपने फरमाया कि इंसान को पता ही नहीं लगता कि मूर्ति पूजा कर रहा हूं और वह अंदर ही अंदर कर रहा होता है। इसलिए फरमाया कि "इसलिए जब तक विशेष रूप से ख़ुदा तआला के लिए ही नहीं हो जाता और अपने रास्ते में हर मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार नहीं होता। सच्चाई और ईमानदारी का रंग पैदा होना मुश्किल है। फरमाया कि "इब्राहीम को जो यह ख़िताब मिला यह ख़िताब यूं ही नहीं मिल गया था।? नहीं وَ اِبۡرٰهِيۡمَ الَّذِىۡ وَفّٰٓى की आवाज़ उस समय आई जब वह बेटे के कुरबानी के लिए तैयार हो गया। अल्लाह तआला कर्म को चाहता है और कर्म ही से प्रसन्न होता है और कर्म दु:ख से आता है" कर्म दुख से आता है अर्थात इंसान को जो अच्छे कर्म हैं उनके करने के लिए और अल्लाह तआला को राज़ी करने वाले कार्यों के लिए कुरबानी करनी पड़ती अपने आप को परेशानी और दु:ख में डालना पड़ता है लेकिन दु:ख में हमेशा नहीं रहता। कर्म करने में नि:सन्देह दु:ख हैं लेकिन दु:ख में हमेशा नहीं रहता आदमी। फरमाया "लेकिन जब इंसान ख़ुदा के लिए दु:ख उठाने के लिए तैयार हो जाए तो ख़ुदा तआला उसे दु:ख में नहीं डालता।..... इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह तआला के आदेश का पालन करने के लिए अपने बेटे को कुर्बान कर देना चाहा और पूरी तैयारी कर ली तो अल्लाह तआला ने उसके बेटे को बचा लिया।" बेटे की जान भी बच गई और पिता को बेटे की कुरबानी के कारण जो दु:ख होना था उस दु:ख से भी मुक्ति हो गई। फरमाया कि "वह आग में डाले गए(हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम) लेकिन आग उन पर कोई असर न कर सकी। फरमाते हैं कि अगर इंसान "अल्लाह तआला की राह में तकलीफ उठाने को तैयार हो जाए तो ख़ुदा तआला कष्ट से बचा लेता है।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृ 429-430 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो यह है वह स्तर अल्लाह तआला का प्यार जज़ब करने के लिए और उसके फज़लों को हासिल करने के लिए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे सामने पेश फरमाया है और हम से इस को हासिल करने की उम्मीद रखी है। यह गुणवत्ता न केवल हर वाक्फ नौ को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए बल्कि हर वाक्फ ज़िन्दगी को याद रखना चाहिए कि जब तक कुरबानियों की गुणवत्ता में नहीं बढ़ेंगे हमारे वक्फ ज़िन्दगी के दावे स्तरीय दावे होंगे।

कुछ माताएं कह देती हैं हम कनाडा आ गए हैं। हमारा बेटा पाकिस्तान में मुरब्बी है या वक्फ ज़िन्दगी है। उसे भी यहाँ बुला लें और यहीं उसकी ड्यूटी लगा दें या हमारे पास आ जाए। जब वक्फ कर दिया तो मांग कैसी फिर यह ख्वाहिशें कैसी? ख्वाहिशें तो ख़त्म हो गईं। जैसा कि मैंने कहा कि वाक़फीन नौ में शामिल होने की प्रवृत्ति बढ़ रही है यह बड़ी अच्छी बात है तो इस प्रवृत्ति को अल्लाह तआला के लिए पवित्र करते हुए आगे बढ़ाएं न कि परिस्थितियों के बदलने से अपने वादों को कमज़ोर करने वाले या तोड़ने वाले बन जांए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि बिना दु:ख के बिना परेशानी के कुरबानी नहीं हो सकती। हालात अगर बदले हैं तो हम ने इस को सहन करना है विशेष रूप से उन्होंने जिन्होंने अपने आप को वक्फ करने के लिए प्रस्तुत किया है या जिनके माता-पिता ने अपने बच्चों को प्रस्तुत किया और फिर उन्होंने इस का नवीकरण किया कि हम अपने वादे जारी रखेंगे। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि जब मनुष्य ख़ुदा के लिए हर कुर्बानी के लिए तैयार हो जाता है तो अल्लाह तआला नहीं छोड़ता और अपार सम्मानित करता है। अल्लाह तआला करे कि सभी वाक़फीन नौ भी और उनके माता-पिता भी वक्फ की वास्तविकता को समझते हुए अपने वादों को पूरा करने वाले हों और अपनी वफाओं के मानकों को ऊंचे से ऊंचे करते चले जाने वाले हों।

संक्षेप में कुछ प्रशासनिक बातें और वाक़फीन के लिए लाहे अमल की ओर भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ। कुछ लोग सवाल उठाते हैं। कुछ वाक़फीन नौ के मन में ग़लतफहमियां हैं कि वक्फ नौ होकर उन की कोई अलग एक पहचान बन गई है पहचान तो बेशक बन गई है लेकिन इस पहचान के साथ उनसे असाधारण व्यवहार भेदभाव नहीं होगा बल्कि इस पहचान के साथ उन्हें कुरबानी की गुणवत्ता बढ़ानी होंगी। कुछ लोग अपने वाक़फीन नौ बच्चों के दिमाग़ में यह बात डाल देते हैं कि तुम बड़े विशेष बच्चे हो जिसका नतीजा यह है कि बड़े होकर भी उनके दिमाग़ों में विशेष होना रह जाता है और यहां भी इस प्रकार की बातें मुझे पहुंची हैं। वे वक्फ की वास्तविकता को पीछे कर देते हैं और वक्फ नौ ख़िताब को अपने ज़िन्दगी का उद्देश्य समझ लेते हैं कि हम विशेष हो गए।

कुछ के मन में यह विचार पैदा हो गया है क्योंकि हम वक्फ नौ में हैं इसलिए हमें अगर लड़कियां हैं नासरात और लजना और लड़के हैं तो अत्फाल

और ख़ुद्दाम के कार्यक्रमों में शामिल होने की ज़रूरत नहीं है। हमारी तंज़ीम एक अलग तंज़ीम बन गई। यह बिल्कुल ग़लत धारणा है अगर यह किसी के दिल में है। जमाअत का तो कोई अधिकारी भी यहां तक कि अमीर जमाअत भी अपनी आयु से संबंधित ज़ैली संगठन का सदस्य होता है।

अत: हर वक्फ नौ लड़की और लड़के को याद रखना चाहिए कि वे अपने संगठनों के सदस्य हैं जिस जिस उमर में हैं और उनके लिए इन कार्यक्रमों में भाग लेना आवश्यक है और जो भाग नहीं लेता उनके बारे में संबंधित तंज़ीम के सदर जो है वह रिपोर्ट करे और यदि वक्फ नौ का सुधार नहीं होता तो ऐसे बच्चे या लड़के या युवा को वक्फ नौ की तहरीक से निकाल दिया जाएगा। हां अगर कुछ जमाअत के कार्यक्रम हैं वक्फ नौ के कार्यक्रम है ज़ैली संगठनों के कार्यक्रम हैं आपस में एक साथ मिलकर एक ऐसे समय में रखे जा सकते हैं जिस में ज़ैली संगठन अपने कार्यक्रम और वक्फ नौ वाले अपने। और कोई clash न हो। इसलिए इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

वक्फ नौ जैसा कि मैंने कहा बड़े स्पेशल हैं लेकिन विशेष होने के लिए उन्हें साबित करना होगा। क्या साबित करना होगा? कि वे ख़ुदा तआला से संबंध में दूसरों से बढ़े हुए हैं तब वे विशेष कहलाएंगे। उनमें ख़ुदा तआला का ख़ौफ दूसरों से अधिक है तब वे विशेष कहलाएंगे। उनकी इबादतों की गुणवत्ता दूसरों से बहुत बुलंद हैं तब वे विशेष कहलाएँगे। वे फर्ज़ नमाज़ों के साथ नफल भी अदा करने वाला हैं तब वे विशेष कहलाएंगे। उनकी सामान्य नैतिकता का स्तर अत्यधिक उन्नत है यह एक निशानी है विशेष होने की। उनकी बातचीत में दूसरों की तुलना में बहुत अंतर है। स्पष्ट पता लगता है कि विशेष प्रशिक्षित और धर्म को दुनिया में हर हाल में प्राथमिकता देने वाला व्यक्ति है तब स्पेशल होंगे। लड़कियां हैं तो उनका लिबास और पर्दा सही इस्लामी शिक्षा का नमूना है जिसे दूसरे लोग देखकर भी ईर्ष्या करने वाले हों और यह कहने वाले कि वास्तव में इस माहौल में रहते हुए भी उनकी पोशाक और पर्दा एक असाधारण नमूना है तब स्पेशल होंगी। लड़के हैं तो उनकी नजरें नम्रता की वजह से नीचे झुकी हुई हों न कि इधर उधर ग़लत कामों की ओर देखने वाली, तब स्पेशल होंगे। इंटरनेट और अन्य बातों पर लग़्व देखने के स्थान पर वह समय धर्म का ज्ञान प्राप्त करने वाले हों तो तब स्पेशल होंगे। लड़कों के हुलिए दूसरों से उन्हें अलग करने वाले हों तो तब स्पेशल होंगे। वक्फ नौ लड़के और लड़कियां दैनिक कुरआन की तिलावत करने वाले और इस आदेश की तलाश करके उस पर अनुकरण करने वाले हों तो विशेष कहला सकते हैं। ज़ैली संगठनों और जमाअतों के कार्यक्रमों में दूसरों से बढ़कर और नियमित हिस्सा लेने वाले हैं तो विशेष हैं। माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार और उनके लिए दुआ में अपने दूसरे भाई बहन से बढ़े हुए हैं तो यह एक विशेषता है। रिश्तों के समय लड़के भी और लड़कियां भी दुनिया देखने के स्थान पर धर्म देखने वाले हैं और फिर वे रिश्ते निभाने वाले भी हैं तब कह सकते हैं कि हम विशेष रूप से धार्मिक निर्देशों का पालन करते हुए अपने रिश्ते निभाने वाले हैं तो विशेष कहलाएंगे। उनमें सहन का माद्दा दूसरों से अधिक है लड़ाई झगड़ा और बुराईयों के मामले में इससे बचने वाले हैं बल्कि सुलह करवाने वाले हैं तो विशेष हैं। तब्लीग़ के क्षेत्र में सबसे आगे आकर इस फर्ज़ को अंजाम देने वाले हैं तब स्पेशल हैं। ख़िलाफत का पालन करना और उसके फैसलों पर अनुकरण में सबसे आगे हैं तो विशेष हैं। दूसरों से अधिक कठोर दिल और कुरबानियां देने वाले हैं तो बिल्कुल स्पेशल हैं। विनम्रता और बे नफसी में सबसे बढ़े हुए हैं अहंकार से नफरत और उसके ख़िलाफ जिहाद करने वाले हैं तो बड़े स्पेशल हैं एम.टी.ए पर मेरे ख़ुत्बा सुनने वाले और मेरे हर कार्यक्रम को देखने वाले हैं ताकि उन्हें मार्गदर्शन मिलता रहे तो बड़े स्पेशल हैं।

अगर तो ये बातें और सारी वे सब बातें जो अल्लाह तआला को पसंद हैं यह सब कर रहे हैं और वे सभी बातें जो अल्लाह तआला को नापसंद हैं और उनसे उसने रोका है इससे रुकने वाले हैं तो निश्चित रूप से विशेष बल्कि बहुत स्पेशल हैं अन्यथा आप में और दूसरों में कोई अंतर नहीं है। यह माँ बाप को भी याद रखना चाहिए और इस तरीका से अपने बच्चों को प्रशिक्षित करना चाहिए क्योंकि अगर ये चीज़े हैं तो इस समय दुनिया में क्रांति लाने का माध्यम आप को अल्लाह तआला ने बनाया है। अगर यह नहीं है और इसलिए दुनिया आपके नमूने को देखने वाली नहीं तो विशेष क्या है अपने वादों को पूरा न करने और अपनी वफा के मानकों को पूरा न उतरने की वजह से बेवफाओं और अहद तोड़ने वालों में अल्लाह तआला के नज़दीक शुमार होंगे।

इसलिए तरबियत के दौर में से गुज़रते हुए समय माता-पिता इस बात के लिए ज़िम्मेदार हैं कि इस मामले में उन्हें विशेष बनाएँ और बड़े होकर यह वाक़फीन नौ ख़ुद इस विशेष होने की गुणवत्ता को प्राप्त करें।

जैसा कि मैंने कहा था कि अपनी सांसारिक शिक्षा के दौरान विभिन्न समयों से गुज़रते समय बजाय ख़ुद निर्णय करने के जमाअत से पूछें कि हमें किस लाइन में जाना है। लाइन चुनने के बारे में वाक़फीन नौ लड़के पहले भी कह चुका हूं कि जामियों में जाकर मुरब्बी और मुबल्लिग़ बनने को पहली प्राथमिकता दें। इस समय इस की ज़रूरत है। अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत फैल रही है। न केवल इन देशों में नई जमाअतों की स्थापना हो रही हैं जहां जमाअत के स्थापना को लंबा समय बीत गया है बल्कि नए-नए देश भी अल्लाह तआला जमाअत को प्रदान कर रहा है और वहाँ जमाअत स्थापित हो रही हैं और हमें हर देश में अनगिनत मुरब्बी और मुबल्लिग़ चाहिए। फिर हमारे अस्पतालों के लिए डाक्टरों की ज़रूरत है। पाकिस्तान में रबवा में कई डॉक्टरों की जो विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ हों उन की ज़रूरत है। कादियान में अस्पताल में डाक्टरों की ज़रूरत है। दुनिया वाले मेरा ख़ुत्बा सुन रहे हैं अगर यहां से नहीं जा सकते तो अपने-अपने देशों में वाक़फीन नौ इस ओर ध्यान दें और विशेषज्ञ डॉक्टरों की ज़रूरत है। बहुत बड़ी कमी है कि हमारे पास विशेषज्ञ डॉक्टर कम हैं। अफ्रीका में डाक्टरों की ज़रूरत है और हर क्षेत्र के डॉक्टरों की ज़रूरत है। फिर अब ग्वाटेमाला में बड़ा अस्पताल बन रहा है वहाँ तो कैनाडा से भी जा सकते हैं। यहां डाक्टरों की ज़रूरत है और यह ज़रूरत भविष्य में बढ़ेगी। इंडोनेशिया में ज़रूरत है और जैसे-जैसे जमाअत फैलेगी यह ज़रूरत बढ़ती जाएगी। इसलिए स्पेशलाईज़ करके उन देशों से उच्च शिक्षा प्राप्त करके और अनुभव लेकर वाक़फीन नौ बच्चों को जो डॉक्टर बन रहे हैं उन्हें आगे आना चाहिए और जिन देशों में जाना आसान है वहाँ जाना चाहिए। अपने आप को प्रस्तुत करें फिर जमाअत भेज देगी। इसी तरह स्कूलों के लिए शिक्षकों की आवश्यकता है डॉक्टरों और टीचर्स के लिए तो लड़कियों और लड़के दोनों ही काम आ सकते हैं इसलिए इस ओर ध्यान करें। कुछ आर्किटेक्ट और इंजीनियर्ज़ भी चाहिए जो निर्माण विभाग के विशेषज्ञ हों ताकि मस्जिदों, मिशन हाउसज़, स्कूल, अस्पताल आदि के निर्माण के कामों में सही निगरानी कर सकें और योजना करके जमाअत के मालों को बचाया जा सके। कम पैसे में बेहतर सुविधा प्रदान की जा सके। फिर पैरा मेडिकल स्टाफ भी चाहिए उसमें भी आना चाहिए तो यह तो वे कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिनकी जमाअत को फिलहाल ज़रूरत है। भविष्य में आवश्यकताएं परिस्थितियों के अनुसार बदलती भी रहेंगी।

कुछ वाक़फीन नौ अपनी रुचि भी कुछ विषयों में अधिक होती है और जब मेरे से पूछते हैं तो मैं उनकी रुचि देखते हुए उन्हें अनुमति दे देता हूँ कि वे पढ़ें लेकिन यहां के छात्रों को यह भी कहूंगा कि वे विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में रिसर्च में भी जाएं और इसमें सामान्य रूप में वाक़फीन नौ भी और दूसरे छात्र भी शामिल हैं। विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की खोज में हमारे उत्कृष्ट वैज्ञानिक पैदा हो जाएं तो भविष्य में जहां धर्म का ज्ञान देने वाले अहमदी होंगे और दुनिया धर्म सीखने के लिए आप की मोहताज होगी वहाँ सांसारिक ज्ञान देने वाले भी अहमदी मुसलमान होंगे और दुनिया आप की मोहताज होगी। ऐसे में वाक़फीन नौ बेशक दुनिया का काम कर रहे होंगे लेकिन उनका उद्देश्य इस ज्ञान और काम के द्वारा ख़ुदा तआला की तौहीद को दुनिया में साबित करना होगा इस के धर्म को फैलाना होगा।

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इसी तरह दूसरे क्षेत्रों में वाक़फीन नौ जा सकते हैं लेकिन मुख्य लक्ष्य यह है और जो हर एक को जानना चाहिए कि मैं वाक्फे ज़िन्दगी हूँ और किसी भी समय मुझे सांसारिक काम छोड़कर धर्म की ज़रूरत के लिए पेश होने के लिए कहा जाए तो बिना किसी बहाने के बिना किसी हील व हुज्जत के आ जाऊँगा।

एक महत्त्वपूर्ण बात जो हर वक्फे नौ को याद रखनी चाहिए कि दुनिया के काम करने की अनुमति उन्हें दी जाती है लेकिन यह दुनिया के काम उन्हें अल्लाह तआला की इबादत और धर्म का ज्ञान और धर्म की सेवा से वंचित करने वाला न हो बल्कि यह उच्च मानकों को प्राप्त करने की कोशिश उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता हो। कुरआन की तफसीर और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अध्ययन हर वक्फ नौ के लिए आवश्यक है। वक्फ नौ विभाग ने इक्कीस साल की उम्र तक शायद सिलेबस बनाया हुआ है वह मौजूद है इसके बाद ख़ुद अपने धार्मिक ज्ञान को बढ़ाऐं यह आवश्यक है।

माता-पिता को भी मैं यह कहना चाहता हूं कि वह जितनी चाहे अपने बच्चों की मौखिक तरबियत कर लें इसका असर तब तक नहीं होगा जब तक अपनी कथनी और करनी को उस के अनुसार नहीं करेंगे। माता-पिता को अपनी नमाज़ों की हालतों का नमूना बनाना होगा। कुरआन पढ़ने पढ़ाने के लिए अपने नमूने स्थापित करने होंगे। उच्च नैतिकता के लिए नमूना बनना होगा। धार्मिक ज्ञान सीखने की तरफ ख़ुद भी ध्यान देना होगा। झूठ से नफरत के उच्च नमूने स्थापित करने होंगे। घरों में बावजूद इसके कि कुछ को किसी अधिकारी से तकलीफ पहुंची हो निज़ाम के ख़िलाफ या अधिकारियों के ख़िलाफ बोलने से बचना होगा। एम.टी.ए पर कम से कम मेरे ख़ुत्बे जो हैं वे नियमित सुनने होंगे और ये बातें केवल वाक़फीन नौ माता पिता के लिए आवश्यक नहीं बल्कि हर अहमदी जो चाहता है कि उनकी नस्लें जमाअत के निज़ाम से जुड़ी रहीं उन्हें चाहिए कि अपने घरों को अहमदी घर बनाएं। दुनिया वालों के घर न बनाएं अन्यथा अगली नस्लें दुनिया में पड़ कर न केवल अहमदियत से दूर चली जाएंगी बल्कि ख़ुदा तआला से भी दूर हो जाएंगी और अपनी दुनिया और परलोक दोनों बर्बाद करेंगी।

ख़ुदा करे कि न केवल सभी वाक़फीन नौ बच्चे ख़ुदा तआला की निकटता पाने वाले और तक्वा पर चलने वाले हों बल्कि उनके प्यारों के कर्म भी उन्हें हर प्रकार की बदनामी से बचाने वाले हों बल्कि हर अहमदी वह वास्तविक अहमदी बन जाए जिसकी बार बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें हिदायत फ़रमाई है ताकि दुनिया में शीघ्रतर हम अहमदियत और वास्तविक इस्लाम का झंडा उठता हुआ देखें।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह हमें समझाते हुए कहते हैं कि

"मनुष्य एक दो कामों से समझ लेता है कि मैंने ख़ुदा को राज़ी कर लिया है हालांकि यह बात नहीं होती" फरमाया कि "आज्ञाकारिता एक बड़ा मुश्किल काम है सहाबा की आज्ञाकारिता आज्ञाकारिता थी।" वह वास्तविक आज्ञाकारिता थी जिसके नमूने हमारे सामने है। फरमाते हैं कि "क्या आज्ञापालन एक आसान काम है? जो पूर्ण रूप से पालन नहीं करता वह इस संबंध को बदनाम करता है। आदेश एक नहीं होता बल्कि आदेश तो बहुत हैं जिस तरह जन्नत के कई दरवाज़े हैं कि कोई किसी से प्रवेश करता है और कोई किसी से इसी तरह जहन्नम के कई दरवाज़े हैं ऐसा न हो कि तुम एक दरवाज़ा तो जहन्नम का बंद करो और दूसरा खुला रखो।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृ 73-74 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप फरमाते हैं कि

"आदमी को बैअत करके केवल यह नहीं मानना चाहिए कि यह सिलसिला सच्चा है और इतना मानने से उसे बरकत होती है।.... केवल मानने से अल्लाह तआला ख़ुश नहीं होता जब तक अच्छे कर्म न हों। कोशिश करो कि जब इस सिलसिला में दाख़िल हुए हो तो हो नेक बनो प्रत्येक बुराई से बचो। बुराई से खबरदार रहो।.... ज़बानों को नरम रखो। इस्तिग़फार को अपना सामान्य नियम बनाओ। नमाज़ों में दुआएं करो।

(मल्फूज़ात भाग 4 पृ 274 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अल्लाह तआला हम सब को उन नसीहतों का पालन करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हम भी और हमारी नस्लें भी नेकी और तक्वा में स्थापित होने वाली हो और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा करने वाली हों।

☆ ☆ ☆

शाने इस्लाम

कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हर तरफ़ फ़िकर को दौड़ा के थकाया हमने
कोई दीं दीने मुहम्मद सा न पाया हमने
कोई मज़्हब नहीं ऐसा कि निशाँ दिखलाए
ये समर बाग़े मुहम्मद से ही खाया हमने
हमने इस्लाम को ख़ुद तजुरबा करके देखा
नूर है नूर उठो देखो सुनाया हम ने
और दीनों को जो देखा तो कहीं नूर न था
कोई दिखलाए अगर हक़ को छुपाया हमने
आओ लोगो कि यहीं नूरे ख़ुदा पाओगे
लो तुम्हें तौर तसल्ली का बताया हमने
आज इन नूरों का इक ज़ोर है इस आजिज़ में
दिल को इन नूरों का हर रंग दिलाया हमने
जबसे ये नूर मिला नूरे पयम्बर से हमें
ज़ात से हक़ की वुजूद अपना मिलाया हमने
मुस्तफ़ा पर तेरा बेहद हो सलाम और रहमत
उससे ये नूर लिया बारे ख़ुदाया हमने
रब्त है जाने मुहम्मद से मेरी जाँ को मदाम
दिल को वह जाम लबालब है पिलाया हमने
हम हुए ख़ैरे उमम तुझ से ही ऐ ख़ैरे रुसूल
तेरे बढ़ने से क़दम आगे बढ़ाया हमने
आदमी ज़ाद तो क्या चीज़ फ़रिश्ते भी तमाम

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

(बदर 24 जुलाई 1903 ई.)

सिनेमा, थियेटर

पश्चिमी देशों में जो नग्नता और बेहूदगी पैदा हो चुकी है और आवारागर्दी जिस हद तक उनके समाज में गहराई तक पैठ कर चुकी है इस ज़माना में उन दृश्यों को सिनेमा के पर्दे पर दिखाया जाता है जो नई पीढ़ी में मज़्हब से दूरी और बुरे स्वभाव की ओर झुकाव पैदा करते हैं। रुपया और वक़्त का नुकसान इसके अलावा है। इन्हीं ख़राबियों को देखते हुए हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह सानी (द्वितीय) रज़ियल्लाहो अन्हो ने जो नसीहतें जारी कीं उनमें से कुछ बतौर नमूना दर्ज हैं।

फ़रमाया:-

1. ''इसके बारे मैं जमाअत को हुक्म देता हूँ कि कोई अहमदी सिनेमा, सरकस, थियेटर वग़ैरह यहाँ तक कि किसी तमाशे में बिल्कुल न जाये और उस से पूर्णतया बचाव करे। हर मुख़लिस (निष्ठावान) अहमदी जो मेरी बैअत के महत्व को समझता है उस के लिये सिनेमा या कोई और तमाशा वग़ैरह देखना या किसी को दिखाना जायज़ नहीं।

2. ''सिनेमा के बारे में मेरा ख़्याल है कि इस ज़माना की सब से बुरी लानत है। इसने सैकड़ों शरीफ़ घरानों के लड़कों को गाने वाला और सैकड़ों शरीफ़ घरानों की लड़कियों को नाचने वाली बना दिया है, सिनेमा देश के चरित्र पर ऐसा विध्वंसक प्रभाव डाल रहे हैं। मैं समझता हूँ कि मेरा मना करना तो अलग रहा, अगर मैं मना न करूँ तो भी मोमिन की रूह को ख़ुद ब ख़ुद इससे बग़ावत करनी चाहिए"।

(मुतालिबात, पृ. 27 से 41)

इस ज़माना में टेलीवीज़न की वजह से सिनेमा जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। घर में बैठे-बैठे ड्रामे (नाटक) देखे जा सकते हैं। सिनेमा और टेलीवीज़न स्वयं में तो बुरे नहीं लेकिन इस ज़माना में इन का नुक़सान फ़ायदे से ज़्यादा है और ख़राबियों को फैलाने का एक ख़ास कारण बन गये हैं। इसलिये इस बात की आवश्यकता है कि पूरा कन्ट्रोल हो और बुरे दृश्य देखने में समय बर्बाद न किया जाये। हज़रत अमीरुल मोमिनीन ने जो कुछ सिनेमा के बारे में इर्शाद फ़रमाया वही टेली वीजन की फ़िल्मों, ड्रामों, और दृश्यों पर भी चरितार्थ होता है।

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 1 Decmber 2016 Issue No. 39

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

ईमान की जड़ की मज़बूती के साथ सालेह आमाल की हरी भरी शाखांए भी होनी चाहिए।

अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं कि

"केवल ईमान के दावे तथा इसके प्रदर्शन और इसकी जड़ की मज़बूती की घोषणा करना किसी काम का नहीं, जब तक नेक कर्मों की हरी भरी शाखें तथा फल सुन्दरता न दिखा रहे हों तथा जब यह सुन्दरता तथा लाभ पहुंचाना हो तो फिर दुनिया भी आकर्षित होती है तथा इसके चारों ओर एकत्र भी होती है और इनकी सुरक्षा के लिए फिर चेष्टा भी करती है। इसलिए अल्लाह तआला ने हर मुसलमान को केवल ईमान की मज़बूती के लिए नहीं कहा बल्कि लगभग प्रत्येक स्थान पर जहां ईमान का वर्णन हुआ है ईमान को सत्य कर्मों के साथ जोड़ कर प्रतिबंधित किया है और यह हालत पैदा करने के लिए अल्लाह तआला नबियों को भी भेजता है। यह हालत मोमिनों में उस समय पैदा होती है, जब ज़माने के नबी के संग सम्बन्ध भी स्थापित हो। जैसा कि मैंने कहा बड़े बड़े समूह हैं जो धर्म के नाम पर, ईमान के नाम पर अपनी मज़बूत जड़ों को व्यक्त करते हैं लेकिन हो क्या रहा है? उनकी न केवल आपस में नफ़रतें बढ़ रही हैं और एक समूह दूसरे समूह पर अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए जो भी प्रयास हो सकता है वैध अवैध तरीके से, अत्याचार से वह करने की कोशिश कर रहा है बल्कि गैर मुस्लिम भी परेशान होकर उनके कारण से इस्लाम से डर रहे हैं। वह धर्म जिसने ग़ैर मुस्लिमों की मुहब्बत को समेटा और मुसलमान देशों की सुरक्षा के लिए ग़ैर मुस्लिम भी मुसलमानों की ओर से लड़ने के लिए तैय्यार हो गए, उसकी यह दशा है कि ग़ैर मुस्लिमों को तो क्या खींचना है ख़ुद मुसलमानों की आपस की हालत नेक कर्मों की कमी के कारण कुलूबुहुम शत्ता (अल्हशर:15) का दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं। इनके दिल फटे हुए हैं।

आज इन अमले सालेह की सही तसवीर प्रस्तुत करना हर अहमदी का काम है, जिसने ज़माने के इमाम और नबी को माना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत ही ख़ुदा तआला का लगाया हुआ वह वृक्ष है जिसकी जड़ें शक्तिशाली हैं तथा शाखें भी हरी भरी और सुन्दर तथा फलदार हैं जो दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करता है और यह सब कुछ इस लिए है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें वास्तविक इस्लाम की शिक्षा से परिचित किया है। हमें आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलने की प्रेरणा दिलाई, ज़ोर दिया, ध्यान दिलाया, इसका महत्त्व स्पष्ट किया।

इसलिए यह जमाअत अहमदिया ही है जिसकी जड़ें भी मज़बूत हैं और शाख़ें भी रसीली और सुंदर और फलदार हैं जो दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करती है। यह वह वृक्ष है जिसे देखकर दुनिया के हर क्षेत्र में बसने वाले लोग यह कहते हैं कि यह कौन सा इस्लाम है जो तुम प्रस्तुत करते हो। अनगिनत घटनाएं अब ऐसे सामने आती हैं कि वास्तविक इस्लाम की सुंदरता देखकर लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

अफ्रीका में एक स्थान पर एक मस्जिद का उद्घाटन हो रहा था। वहां के चीफ ईसाई थे, उनको भी आमन्त्रण दिया गया। वह भी सम्मिलित हुए। वह कहने लगे कि मैं यहां तुम लोगों की मुहब्बत में नहीं आया। मैं तो केवल यह देखने आया था कि इस ज़माने में यह कौन से मुसलमान हैं जिन्होंने अपनी मस्जिद के उद्घाटन पर एक ग़ैर मुस्लिम और ईसाई को भी बुलाया है। यहां आकर और यह देखकर मुझे और भी आश्चर्य हुआ कि यहां तो विभिन्न धर्मों के लोग उपस्थित हैं और स्वंय अहमदी भी मुसलमान होने के बावजूद ऐसे सुन्दर आचरण का प्रदर्शन कर रहे हैं जिसका उदाहरण नहीं मिलता। प्रत्येक छोटा हो बड़ा हो अमीर हो ग़रीब हो प्रत्येक से यह लोग प्यार और मुहब्बत से पेश आ रहे हैं और यहाँ ऐसे संबंध हैं और ऐसी उच्च नैतिकता हैं जिनका प्रदर्शन किया जा रहा है कि कहीं भी देखने में नहीं आता। फिर वह चीफ कहने लगे कि ऐसी मस्जिदें और ऐसा इस्लाम तो समय की ज़रूरत है। इसलिए उन्होंने कहा कि मेरे सभी संदेह जो इस्लाम के बारे में थे वह दूर हो गए और फिर उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र को एक नई मस्जिद नहीं दी बल्कि हमें एक नया जीवन दिया है। जीवन के उच्च मूल्यों के तरीके सिखाए हैं।

अत: ऐसे वृक्ष होते हैं जिनके बारे में क़ुर्आन करीम ने फ़र्माया है कि उनकी जड़ें भी धरती में गहरी होती हैं और ईमान तथा नेक कर्मों के कारण यदि इंसानों का उदाहरण वृक्ष से दिया जाए तो उनकी हरी भरी शाखें भी आकाश की ऊँचाइयों को छू रही होती हैं।

अत: जैसा कि मैं ने कहा कि ज़माने के इमाम के कारण हर अहमदी का कर्त्तव्य है कि सुदृढ़ ईमान के साथ हरी भरी शाखें बन जाए। हरी भरी शाखों के सुन्दर पत्ते बन जाए, उन पर लगने वाले सुन्दर फूल और फल बन जाए जो दुनिया को न केवल सुन्दर दिखाई दे बल्कि लाभ देने वाला भी हो। लाभ पहुंचाने वाला हो अन्यथा ईमान और विश्वास में सही होना बिना कर्म के लाभ रहित है। जैसा कि मैंने कहा कि स्पष्ट रूप से ईमान और विश्वास में पूर्ण दुनिया जो लोग हमें दिखाई देते हैं वे कहने में तो अपने आप को ईमान और विश्वास में पूर्ण समझते हैं और कहते हैं लेकिन दुनिया के लिए ठोकर का कारण बन रहे हैं।

(अल्फज़ल इन्ट्रनेशल 10 अक्तूबर,पृष्ठ 5-6)

(नज़ारत इस्लाह इर्शाद मर्कज़िया)

☆ ☆ ☆

क़सर नमाज़

1. सफर की अवस्था में नमाज़ क़स्र (छोटी) करनी चाहिए। जो फ़र्ज़ नमाज़ चार रकअत वाली हो इस को दो पढ़े। जो फर्ज़ नमाज़ दो या तीन रकअत वाली हो वह पूरी पढ़े। तथा पिछली सुन्नतें आवश्यक नहीं परन्तु प्रात: की दो सुन्नतें तथा इशा के तीन वितर अवश्य पढ़े।

2. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम से निवेदन किया गया कि इंसानों के हालात (परिस्थितियां) भिन्न-भिन्न होते हैं। कुछ नौ दस कोस को भी यात्रा नहीं समझते परन्तु कुछ के लिए तीन या चार कोस भी यात्रा है। हुज़ूर ने फ़रमाया ''धर्म शास्त्र ने इन बातों का विश्वास नहीं किया। सहाबा किराम ने तीन कोस को भी सफर समझा है।

निवेदन किया गया ''हुज़ूर बटाला जाते हैं तो क़स्र करते हैं ? (बटाला कादियां से ग्यारह मील दूर है) फरमाया :-

''हां, क्योंकि वह यात्रा है। हम तो यह कहते हैं कि यदि कोई डाक्टर या अधिकारी कई गावों का चक्कर लगाता है तो वह अपनी सारी यात्रा को एकत्र करके यात्रा नहीं कह सकता"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 10 पृ. 100)

3. यदि किसी स्थान में पन्द्रह दिन निवास का इरादा है तो क़सर न करें तथा यदि कोई इरादा नहीं तो फिर क़स्र करता रहे।

जमा नमाज़ (इक्ट्ठा करना)

यात्रा की अवस्था में या वर्षा के समय या किसी अन्य मजबूरी (विवशता) के समय या किसी धार्मिक सम्मेलन के कारण नमाज़ें जमा की जा सकती हैं अर्थात ज़ुहर तथा अस्र तथा मग़रिब एवं इशा की नमाज़ें जमा करने की अवस्था में सुन्नतें माफ़ हैं।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad